

किसको ईश्वर बेसहारा नहीं छोड़ते?

जो सज्जन ईश्वर-ज्ञान और ईश्वर-प्राप्ति को अपने जीवन का लक्ष्य मानते हैं उनको ईश्वर कभी नहीं छोड़ते। लक्ष्य -प्राप्ति पर हमारी दृढ़ता ही सफलता का रहस्य है।

प्रेम वचन

जन्म से मृत्यु तक के बीच में जो वस्तुएँ उपलब्ध होती हैं वे वास्तव में धन संपत्ति नहीं हैं। मन में ईश्वर का स्मरण रहे तो वही है महत्तम ऐश्वर्य। इस वचन को कभी मत भूलिएगा।

दीपमालिका पूजा, प्रदोश, गिरि-प्रदक्षिणा, पदयात्रा आदि के पालन के लिए सही ढंग, उनसे प्राप्त सुफल, शुभकार्यों में बधाई देने की रीति, आध्यात्म से संबंधित प्रश्नोत्तर, आत्मा की उन्नति के लिए प्रार्थना के प्रकार - इन सबकी जानकारी के लिए निम्नलिखित पुस्तकों का अध्ययन करें -

युवा वर्ग की उन्नति के लिए हिन्दू धर्म द्वारा प्रतिपादित सफलता के तरीके मूल्य ₹: 10/-
हिन्दू धर्म द्वारा प्रतिपादित सफलता देनेवाली ईश्वर प्रार्थनाएँ मूल्य ₹: 10/-

हिन्दू युवजन आध्यात्मिक सेवा संघ
HINDU YOUTH SPIRITUAL SEVA SANGAM

तथा

हिन्दू समग्र उन्नति अभियान
HINDU UNITED PROGRESSIVE MOVEMENT

Dhuraimurugur Shiva Meditation Sabha,
Palani-Dindigul Main Road, Kanakkanpatti Post,
PALANI, DINDIGUL Dist. - 624 613, TAMILNADU.

इस पत्र को हाथों हाथ बाँटते हुए औरों की भलाई के लिए इसे प्रकाशित करने में सहायता प्रदान करें।



HINDU UPM
Regd. 1854-2012 www.hinduupm.co.in

ॐ नमः शिवाय

माधुर्यपूर्ण हिन्दू धर्म के द्वारा प्रतिपादित प्रार्थना पद्धति तथा सफलता के लिए मार्गदर्शन

WAY TO SUCCESSFUL PRAYER

जैसे स्वस्थ शरीर के लिए भोजन है
वैसे आत्म शक्ति के लिए हिन्दू धर्म का ज्ञान आवश्यक है।

हम मंदिर क्यों जाएँ?

अगर हमें तैरना सीखना हो तो किसी तालाब में जाना होगा। इसी तरह भक्ति-भावना के लिए मंदिर जाना आवश्यक है।

वह मंदिर जो भी हो मन पसंद का होना चाहिए। उसका स्मरण करते हुए मंत्रोच्चारण करके मन ही मन फूल चढ़ाकर भगवान की पूजा करनी चाहिए। हर हफ्ते मंदिर जाने से मन में मंदिर बन जाता है। यही हमारे जीवन में सफलता की कुंजी होगी।



जीवन में सफलता पाने के लिए मनपसंद मंदिर का ध्यान करके

प्रतिदिन मंत्र का जाप करें
ॐ नमः शिवाय नमो नमः
ॐ सच्चिदानंद नमो नमः
ॐ सद्गुरुनाथाय नमो नमः



मंत्र की महिमा

इस मंत्र को बोलकर जो काम शुरू करें वह सफल होगा। लगातार मंत्र जपने से हमारी समस्याएँ दूर होंगी। चमत्कारी परिणाम प्राप्त होंगे। इसलिए मंत्र-जाप करना कभी मत भूलें।

भगवत् भक्ति क्यों करें?

अधिकांश लोग शिक्षा, नौकरी, व्यापार आदि में सफल होने के लिए तथा समस्याओं से मुक्त होने के लिए ईश्वर के प्रति भक्ति प्रदर्शित करते हैं। इन्ने-गिने लोग मूलमंत्र का जाप करके ज्ञान प्राप्ति के लिए और मृत्यु के बाद आत्म कल्याण के लिए ईश्वर की भक्ति करते हैं।

भगवान की भक्ति करने से तथा मंत्र-जाप द्वारा भगवान का स्मरण करते रहने से हाथ में लिया हर काम सफल होगा।

निम्होंने भगवान से प्रार्थना करना सीखा है वे कभी भी किसी भी समस्या से डरते नहीं

संसार में चार प्रकार के भक्त होते हैं

1. मुक्ति के इच्छुक ज्ञानी पुरुष
2. पारिवारिक जीवन में प्रगति चाहनेवाला
3. रोगों से मुक्त होने के लिए प्रार्थी
4. धन-दौलत का वर माँगनेवाले

मनुष्यों में श्रेष्ठ कौन?

सज्जनों के मुँह से उत्तम विचार सुनकर मानों लापता वस्तु वापस मिल गया हो ऐसा सोचकर मस्तिष्क पर उन्हें अंकित करनेवाले और उनका पालन करनेवाले मनुष्यों में श्रेष्ठ होते हैं।

कर्मयोगी कौन ?

कार का चालक गीत सुनते हुए भी ध्यानपूर्वक गाड़ी चलाता है। इसी तरह सांसारिक कर्तव्यों में डूबे रहने पर भी हर क्षण ईश्वर का ध्यान करनेवाला व्यक्ति सच्चा कर्मयोगी होता है।

ईश्वर से छः प्रकार के लाभ प्राप्त करने का ढंग

शिव जी ईश्वर है, वे छः गुणों से संपन्न हैं। ईश्वर को दिल में स्थापित करके अक्सर पूजा करनेवालों को उनके वे छः गुण यानी ज्ञान, ऐश्वर्य, शक्ति, बल, वीरता तथा तेजस अपने आप प्राप्त हो जाएंगे।

शिवधर्म किसे कहते हैं?

1. अहिंसा
2. मिथ्यावाद से डर
3. सहनशीलता
4. भलाई करना
5. सच्चा प्यार
6. दान
7. सच्चिदानंद शिव की पूजा अर्चना करना
8. पुण्य-कार्य करना
9. शिवजी की मानसिक पूजा करना

पुण्य प्राप्ति के लिए प्रार्थना के विशेष दिन:

शिव जी के मंदिरों में सोमवार, शिवरात्री, प्रदोष जैसे दिन में पूजा करनेवाले, अन्नदान करनेवाले पापों और रोगों से मुक्त होकर पुण्य प्राप्त करते हैं। इससे सांसारिक संपत्ति और ईश्वर की कृपा प्रदान होती है।

मन की दृढ़ता से ईश्वर का स्मरण करते रहने से अच्छे अवसर प्राप्त होते हैं

लापरवाही से होनेवाली हानि

1. उद्योग में लापरवाही - नष्ट मिलेगा
2. बातचीत में लापरवाही - दुश्मनी पैदा होगी
3. शरीर के प्रति लापरवाही - जान के लिए खतरा
4. ध्यान में लापरवाही - मन की चंचलता

आत्म संकल्प :

जो जैसा हो, ध्यान करते समय और साथ ही सांसारिक काम में एकाग्रता परमावश्यक है। ऐसे एकाग्र चित्तवालों को ईश्वर कभी बेसहाय नहीं छोड़ते। वे धनवान भी बनेंगे और ईश्वर की कृपा भी प्राप्त करेंगे।

ज्ञान:

अगर तुम विश्वास करते हो कि भगवान हमेशा तुम्हारे साथ हैं, तो तुम अपना कर्तव्य निभाते हुए भागवान का साधन बन जाओगे। -श्रीरडी साईबाबा

“धूमेना प्रियते वह्नि यथाधर्मोमलेनच

यथोल्बेनावृतो गर्भः तथातेनेद मामृतम्”

(भगवद्गीता 1:38)

जैसे धुआँ से आग छिपायी जाती है दर्पण को धूल छिपा देती है गर्भ गर्भाशय से छिपा रहता है वैसे काम भावना से ज्ञान छिपा रहता है। भोग के परदा को हटाने के लिए मन में मूल मंत्र को जप करके प्रतिदिन ईश्वर के प्रति भक्ति दिखाते रहें तो भोग काम भावना का नाश होगा और ज्ञान का जन्म होगा।

माता-पिता के कर्तव्य :

प्रातःकाल उठते ही हाथ-मुँह साफ करके ताजा होकर, मन ही मन मंदिर का स्मरण कर ईश्वर के चरणों पर मन में पुष्प समर्पित करें और मंत्र बोलें। ऐसा करने पर समस्याएँ सुलझ जाएँगी, उद्योग की बढ़ोत्तरी होगी, आत्मिक सफलता मिलेगी। बच्चों को भी ऐसी मानसिक प्रार्थना में अभ्यास देने लगें तो उनका भविष्य उज्ज्वल बनेगा। वे धने और ज्ञान दोनों से सुसज्जित होंगे।

जिनमें मन की दृढ़ता और ईश्वर का स्मरण नहीं है वे अच्छे मौकों के लिए तरसते रहेंगे।